management or mismanagement? If so, what steps are Government are going to take to improve this incompetence?

SHRI F. A. AHMED: There are two things. One is the idle capacity because no work order is there. The other is where the production has not gone up because of something going wrong in that particular unit. That aspect we are also examining and we are trying to see whatever capacity is there, it should be fully utilised.

श्री शिव नारायण: अध्यक्ष महोदय, मैं भारत सरकार से जानना चाहता हूँ कि सेन्ट्रल प्रौजेक्ट्स में से कितना हिस्सा आपने उत्तर प्रदेश को दिया है और वहां पर कितना काम हुआ है ?

SHRI F. A. AHMED: How can I give those figures now?

MR. SPEAKER: Shri P. Gopalan. Not with regard to Kerala.

SHRI P. GOPALAN: I shall put the question with particular reference to my home State. In the third Plan also, Kerala was neglected, and in this background, I would like to know from the hon. Minister whether he has made a recent statement to the affect that the Central Government will have to think in terms of pulling out all the public sector projects from Kerala if the so-called deteriorating labour relations prevail in that State. Is it the policy of the Central Government? He played a conspiracy at the higher level against the united, legitimate share of Kerala and he is continuing a policy of neglect towards our State. Is it the policy ?

SHRI F. A. AHMED: I do not know if the hon. Member is attributing to me a statement made by the hon. Minister of Labour in Kerala. But may I just point out that I had a discussion recently with the Chief Minister and the Minister of Industries in Kerala when I was there, and the hon. Minister of Labour was not present. And there, particularly, the question was raised by me with regard to the functioning of the Heavy Machine Tool factory, and my Managing Director was also there. He pointed out the difficulties created by the labour and the holding up of work in that area. There was the question or certain additional expansion in that project, and I told the Chief Minister that unless the State Government was prepared to give us help, it would be very difficult for us to consider the question of expansion when even what is there is not being worked on account of the serious strike situation in that particular area.

भिलाई इस्पात कारखाने द्वारा अर्जित विदेशी मुद्रा

*787. **श्री हुकम चन्द कछवाय**: क्या इस्पात, खान तथा धातु मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) जनवरी, 1965 से लेकर अब तक भिलाई इस्पात कारखाने द्वारा किस-किस किस्म के इस्पात का कितना-कितना उत्पादन किया गया;

(ख) प्रत्येक किस्म के इस्पात का कितना-कितना निर्यात किया गया; और

(ग) इस निर्यात से कितनी विदेशी मुद्रा कमाई गई और अगले पांच वर्षों में कितना उत्पादन होने की सम्भावना है ?

इस्पात, खान तथा धातु मंत्रालय में राज्य मन्त्री (श्री प्र० चं० सेठी): (क) से (ग). तीन विवरण जिन में अपेक्षित जानकारी दी गई है। सभा-पटल पर रख दिए गये है। [पुस्तकालय में रख दिये गये देखिये संख्या LT–2733/68.]

श्री हुकम चन्द कछवाय: माननीय मंत्री महोदय ने जो जानकारी रखी है उससे ऐसा मालूम होता है कि पिछले दो सालों में विदेशों को भेजे जाने वाले माल में काफी कमी आई है तो मैं जानना चाहता हूं कि उस कमी का क्या कारण है ? दूसरे मैं यह जानना चाहता हूं कि आपने जो यह कहा कि हम विदेशी मुद्रा को बढ़ायेंगे तो क्या आगे आने वाले सालों में आप उसको बढ़ा पायेंगे ?

श्री प्र० चं० सेठी: अध्यक्ष महोदय, पिछले तीन सालों में बाहर जाने वाले माल की मात्रा में बढ़ोत्तरी हुई है, उदाहरण के लिए

भिलाई स्टील प्लान्ट से सन् 65-66 में एक करोड़ का माल गया, 66-67 में डेढ़ करोड़ का माल गया, 67-68 में 13 करोड़ का माल गया और यह साल जिसके तीन-चार महीने अभी बाकी हैं, 11 करोड़ का माल जा चुका है।

श्री हुकम चन्द कछवाय: विदेशी मुद्रा कैसे बढ़ायेंगे ?

श्री प्र० चं० सेठी: मैंने एक्सपोर्ट की फीगर्स दी हैं।

श्री हुकम चन्द कछवाय: अध्यक्ष महोदय, इस समय उसकी जो उत्पादन क्षमता है उसका पूरा उपयोग नहीं हो रहा है और उसका मूल कारण यह है कि वहां पर जो आफिसर्स बिठाए गए हैं वे अयोग्य हैं या कुछ सिफारिश के द्वारा लगाए गए हैं और वे ठीक प्रकार से काम नहीं कर सकते हैं। तो क्या सरकार इसके बारे में फिर से विचार करेगी। इसके अतिरिक्त वहां पर जो काम करने वाले कर्मचारी हैं उनकी बहुत सी सहूलियतें सरकार ने छीन ली हैं, क्या सरकार उसके ऊपर भी विचार करेगी ? इसके अलावा जब आप उत्पादन करते हैं तब क्या इस बात को भी ध्यान में रखते हैं कि विदेशी मार्केट में और देश के अन्दर किन-किन चीजों की वास्तविक आवश्यकता है ?

श्री प्र० चं० सेठी: अध्यक्ष महोदय, जहां तक भिलाई स्टील प्लान्ट के उत्पादन का ताल्लुक है, वह पूरी उत्पादन क्षमता पर काम नहीं कर रहा है, यह बात सही है। इसका मुख्य कारण यह है कि भिलाई स्टील प्लान्ट में जिस प्रकार की चीजें बनाई जाती हैं उनकी मांग देश में कम है, उदाहरण के तौर पर भिलाई में पांच लाख टन रेल्स की उत्पादन क्षमता स्थापित की गई है लेकिन रेलवे की मांग कम हो जाने के कारण रेल्स की खपत कम हो गई है लेकिन उसको बाहर निर्यात करने का प्रोग्राम बनाया गया है और उससे बाहर के निर्यात की मात्रा बढ़ी है।

जहां तक अफसरों का ताल्लुक है, हाल ही में वहां पर नये जनरल मैनेजर एप्वाइन्ट हुए हैं, उन्होंने अभी तक ठीक से वहां का काम चलाया है और कोई शिकायत नहीं आई है कि काम ठीक से नहीं चल रहा है। जहां तक मजदूरों की सहूलियतें कम करने का ताल्लुक है, मेरे पास ऐसी कोई शिकायत नहीं आई है। यदि माननीय सदस्य ऐसी कोई जानकारी देंगे तो हम उस पर विचार करेंगे।

श्री हुकम चन्द कछवाय: विदेशों में जिस माल की आवश्यकता है, उसको ध्यान में रखकर उसी प्रकार का माल निर्मित करने के बारे में सरकार ने विचार किया है ?

श्री प्र० चं० सेठी: उदाहरण के तौर पर मैं बतलाऊँ कि भिलाई स्टील प्लान्ट में केवल 12 मीटर की रेल बनाने की क्षमता स्थापित की गई थी लेकिन चूंकि विदेशों में 18 मीटर की रेल लगती है इसलिए इस प्रकार की सुविधा निर्मित की गई है और आवश्यकतानुसार उस में परिवर्तन किया जायगा।

श्री हुकम चन्द कछवाय: मेरे प्रश्न को फिर टाला गया है। मार्केट में किस की आवश्यकता है, दुनिया के बाजार में कौन सी चीजों की आवश्यकता है और हमारे देश में किन चीजों की आवश्यकता है उन आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए क्या सरकार उन चीजों का निर्माण करेगी ? खाली रेल की बात मैं नहीं कह रहा हूं मैं तो सभी चीजों की बात कह रहा हूं।

SHRI NITIRAJ SINGH CHAUDHARY: The statement shows that the production of billets will go on increasing up to 1971-72 when it will reach 520,000 tonnes and thereafter there is a decrease. May I know why, instead of increasing from year to year, it is decreasing after 1972-73 ?

SHRI P. C. SETHI: Only in the case of billets, decline in production has been indicated. That only indicates that billets would be further converted into finished steel.

SHRI N. K. SOMANI: There will have to be a certain flexibility in production if the export market and internal market have to be fed successfully by our steel mills. May I know whether, in addition to the marketing intelligence obtaining Hindustan Steel and the Steel Ministry, Government would like to re-inforce this by a professional marketing organisation, which will give a reliable forecast of demand both in export and internal markets?

SHRI P. C. SETHI: The public sector steel plants are meant to suit the requirements of the country in view of targets defined by the Planning Commission. To that extent, there is little scope for diversification. But to the extent it is possible to do so, we are trying to do it, because if we try diversification on a big scale, we will have to invest a big amount of money.

Market survey is being undertaken and we are also keeping a constant watch and sending delegations and deputations to foreign countries to study the requirements of foreign countries.

SHRI SAMAR GUHA: Although the production capacity of plants like Bhilai and Rourkela have been expanded, still large quantities of various types of steel are being imported from foreign countries. I want to know what are those varieties, what is the value of the imports and when it will be possible for Bhilai and Rourkela to produce those steels which are being imported today.

SHRI P. C. SETHI: We are importing mainly alloy steel and flat products made of mild steel. When production in Durgapur and Bhadravati picks up, import of alloy steels will go down to a great extent. So far as mild steel and flat products are concerned, when the expanded capacity of Rourkela and Bokaro go into production, the imports of flat products will considerably go down.

SHRI SAMAR GUHA: What about the steel needed for bitumen barrels?

MR. SPEAKER: The hon. Minister has given a categorical and clear answer and I am satisfied with it.

SHRI SAMAR GUHA: With your permission, I want to know whether with the expansion of Bhilai, our import of steel for oil containers and bitumen barrels from outside will be stopped.

SHRI P. C. SETHI: Bhilai is not producing those flat products.

MR. SPEAKER: I know. I have also explained it to him.

श्री शिंकरे : क्या मन्त्री महोदय यह बतलाने की कृपा करेंगे कि भिलाई में जो इस्पात का उत्पादन होता है उसमें बिक्री लायक अर्थात् निर्दोष इस्पात जो उत्पादित होता है उसका परसेंटेज क्या रहता है और जो सदोष इस्पात उत्पादित होता है उसका परसेंटेज क्या रहता है ?

SHRI P. C. SETHI: The percentage of rejects is generally 7 to 8 per cent. But, in the case of rail which we are exporting the percentage of rejects is higher, in the range of 11 to 13 per cent, the reason being that there is much stricter examination of these rails and we are taking more care so that they are not rejected in the foreign market. Still, their is a case for improvement and it is being pursued.

श्री महाराज सिंह भारती : इस साल हम ने 11 करोड़ के करीब फौलाद भिलाई के बाहर भेजा है। मैं जानना चाहता हूं कि भारत के अन्दर जो मार्केट रेट है क्या उसी मार्केट रेट पर आप ने निर्यात किया है और अगर उससे कम मार्केट रेट पर आपने निर्यात किया है तो कितना घाटा आया है और उस घाटे की पूर्ति अनुदान देकर की है या मिल ने उठाई है ?

श्री प्र० चं० सेठी : इंटरनेशनल प्राइस में और यहां की क़ीमत में अन्तर है और उस हद तक उसको सबसिडी देनी होती है।

एक माननीय सदस्य : कितना अन्तर है ?

श्री प्र० चं० सेठी : अन्तर बताना मुनासिब नहीं होगा लेकिन करीब डेढ़ करोड़ रुपया सबसिडी के तौर पर गत वर्ष दिया है।

SHRI R. BARUA: May I know whether recently a whole consignment of rails sent to a foreign country came back because of the defective carbon content?

SHRI P. C. SETHI: Recently we have exported to many countries and nothing has been rejected. This is an old case, two years back, when consignment of rails sent to an African country was rejected.

श्री जगन्नाथराव जोशी: क्या यह बात सच है कि रेल की पटरियां जो कि इथोपिया भेजी गई थीं वह स्पेस्फिकेशन के मुताबिक नहीं थीं इसलिए उन्होंने उसे लेने से इंकार कर दिया, यदि हां, तो ऐसा कितना माल है और ऐसे और भी कितने देश हैं जिन्होंने माल लेने से इन्कार कर दिया और साथ ही माल स्पैस्फिकेशन के मुताबित बराबर उन को पहुंचे इस दृष्टि से क्या कार्यवाही करने का निश्चय किया है ?

श्री प्र० चं० सेठी: मैंने अभी बताया कि चन्द वर्ष पूर्व अफ्रीकन कंट्रीज में जो रेल का माल यहां से गया था उसमें से रिजैक्ट हुआ था। उसके बाद यहां से इंजीनियर्स गये थे और उन्होंने वहां के सब हालात को देखा । उसके बाद से रेल का कोई माल रिजैक्ट नहीं हुआ।

श्री हुकम चन्द कछवाय: वह जो खराब माल तैयार करने के लिए अफसर जिम्मेदार थे उनके खिलाफ़ सरकार ने क्या कार्यवाही की है ?

MR. SPEAKER: This is a supplementary to a supplementary.

SHRI SRINIBAS MISRA: Is it a fact that a visiting team of Russian experts have made some recommendations regarding improving the export potential of Bhilai steel plant and, if so, would the Minister like to place that recommendation on the Table of the House?

SHRI P. C. SETHI: We had a lot of discussion with the visiting team of Russians. They are still at a stage where details cannot be divulged. The protocol is to be signed perhaps in a day or two by the Minister of Industries which will give all the details.

SHRI RANGA: In view of the fact that the higher and rising percentage of rejects speaks very ill of our efficiency and of our inspection staff also, which is supposed to be independent of the management there, and in view also of the fact that they have already installed some machinery which would be testing the strength of the steel, why is it that government have neglected this matter for such a long time and only now they are trying to take some important steps in order to improve the quality of our steel? Is it not a fact that as and when they develop production, simultaneously they see to it that there would be experts who would be examining the quality of it, that there would be machinery also for examining the quality? It speaks very ill indeed of the efficiency and competence of the staff if these rejects were to go on at such a high percentage after so many years of production.

SHRI P. C. SETHI: I have already admitted that there is case for improvement as far as the rejects are concerned.

SHRI RANGA: What do you mean by saying that there is case for improvement? From the very beginning there should not be so much.

SHRI P. C. SETHI: When you have to do specialised production, for example, rail wheels, which are being produced in Durgapur, the percentage of rejects in the initial stages was about 40 per cent but now it has come down to 18 per cent. That itself shows that constant effort is being made to improve the quality.

नई रेलवे लाइनें

\+

* 788. **श्री राम स्वरूप विद्यार्थी**:
श्री भारत सिंह चौहान:

क्या रेलवे मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) देश में विभिन्न रेलवे प्रशासनों के